अशोक के अभिलेखों में पर्यावरण

डॉ0 दीपशिखा पाण्डेय
डॉ0 सुशान्त कुमार पाण्डेय
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

अशोक द्वारा उत्कीर्ण कराये गए समस्त अभिलेखों में अधिकांशतः 'धम्म' जो कि संस्कृत के धर्म शब्द का पालि पर्यायवाची है का अंकन मिलता है जो पर्यावरण का ही एक स्वरूप है। पर्यावरण दो शब्दों से बना होता है परि + आवरण। परि शब्द का अर्थ है 'चारों ओर से' एवं आवरण शब्द का अर्थ होता है 'ढके या घेरे हुए'। इस प्रकार किसी जीव या वस्तु को जो–जो वस्तुएं विषय, जीव एवं व्यक्ति आदि प्रभावित करते है वे सब उसका पर्यावरण है। सामान्यतया पर्यावरण दो प्रकार का होता है, जैविक (वनस्पति तथा पशु पक्षी आदि) तथा अजैविक (वायु, जल आदि), परन्तु इनके अतिरिक्त पर्यावरण को कई अन्य वर्गो में भी बॉटा गया है जैसे – प्राकृतिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण, आर्थिक पर्यावरण, सांस्कृतिक पर्यावरण आदि। वायु, जल, जीव जंतु, पशु पक्षी, वनस्पति आदि प्राकृतिक पर्यावरण है। सम्पत्ति, विनिमय, वितरण आदि आर्थिक पर्यावरण तथा मानवीय सम्बन्धों से निर्मित पर्यावरण सामाजिक पर्यावरण है। सांस्कृतिक पर्यावरण जो कि अशोक के अभिलेखों की नींव अथवा आधारशिला का रूप है वह पर्यावरण है जिसमें संस्कृति द्वारा प्रदत्त वस्तुएं जैसे धर्म, लोकाचार, व्यवहार प्रतिमान आदि आते है। और जिनके अनुरूप मनुष्य अपने को ढालने का प्रयास करता है।

अशोक के राज्यारोहण के बारहवें वर्ष में उत्कीर्ण कराये गए चतुर्दश शिलालेखों में से तेरहवें शिलालेख में वर्णित कलिंग का युद्ध उसके जीवन की महत्वपूर्ण घटना है। कलिंग युद्ध के पश्चात् हृदय परिवर्तन के फलस्वरूप उसने 'धम्म' का मार्ग अपना लिया अर्थात बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। अपनी प्रजा को भी धम्म का पाठ पढ़ाने के लिए अशोक ने अभिलेख उत्कीर्ण कराए जिससे लोग इसे बार–बार पढ़कर इसका अनुसरण करें। अपने दूसरे स्तम्भ लेख में अशोक स्वयं प्रश्न करता है – *कियं चु धम्मे?* (धम्म क्या है ?) इसका उत्तर वह दूसरे एवं सांतवे स्तम्भलेख में स्वतः देता है जिसे हम इस प्रकार रख सकते है–

अपासिनवे बहुकयाने दयादाने सचे सोचये माददे साधवे च। [1]

अर्थात धम्म अल्प पाप, अत्यधिक कल्याण, दया, सत्य, पवित्रता, मृदुता, साधुता हैं। इन गुणों को व्यवहार में लाने हेतु उसने कुछ आवश्यक बातें अपने लेख में दोहरायी है जैसे– ब्रहागिरि लघु शिलालेख के अनुसार–

मातापितिसु सुससितविये [1] हमेव गरूसु [1] प्राणेसु द्राहितव्यं [1] सचंवतवियँ

अर्थात माता पिता की सेवा, गुरूओं की सेवा, जीवों के प्रति दया, सत्य भाषण आदि। इन गुणों के साथ ही उसने कुछ अवगुणों को त्यागने की बात तृतीय स्तम्भ लेख में कही है जो इस प्रकार है चंडिये (उग्रता), निठूलिए (निष्ठुरता), कोधे (क्रोध), माने (सम्मान), इस्या (ईर्ष्या)। अशोक ने धम्म प्रसार हेतु आठवें शिलालेख में अंकित

धर्मयात्रा का प्रचलन किया तथा पांचवे शिलालेख के अनुसार धर्ममहामात्रों की भी नियुक्ति की।

अतः उसके समस्त अभिलेखों में हमें सांस्कृतिक पर्यावरण की स्पष्ट छाप देखने को मिलती हैं। सांस्कृतिक पर्यावरण के साथ–साथ यदि हम उसके अभिलेखों में प्राकृतिक पर्यावरण पर प्रकाश डालें तो निम्नलिखित अभिलेखों में हमें उसके प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण का प्रमाण मिलता है जैसे – अशोक के प्रथम शिलालेख में अंकित इस पंक्ति–

इधन कि चि जीव आरभित्पा प्रजुहितव्य [3]

का अर्थ है कि जीव बलि के लिए नही मारा जाएगा। इस लेख में अशोक ने समाज और जीव हिंसा का निषेध किया है किंतु यह निषेध प्रत्यक्ष रूप से ने करके उसने अपनी पाकशाला में की जाने वाली जीव हिंसा के निषेध के रूप में व्यक्त किया है।

द्वितीय शिलालेख से पता चलता है कि अशोक ने पशु एवं मनुष्यों की चिकित्सा की व्यवस्था न केवल अपने ही राज्य वर्न अपने सीमावर्ती राज्यों में भी की। इसके लिए औषधियों से सम्बन्ध रखने वाले वृक्ष, मूल तथा फल भी लगाए थे, सड़कों पर उसने कुएं खुदवाये तथा छाया के वृक्ष लगवाए थे। उसने तेरहवें शिलालेख में कहा है '*सर्वभूतानाम् अखति*' अर्थात सभी प्राणियों का कल्याण हो। यह भाव केवल मानव के लिए ही नहीं पशुओं के लिए भी था, तभी भूतानाम् शब्द का प्रयोग किया गया है तथा इसी से प्रेरित उसने मनुष्यों तथा पशुओं के लिए चिकित्सालय बनवाया।

चतुर्थ शिलालेख के अनुसार कई वर्ष पूर्व से ही पशुओं का वध व जीवधारियों के प्रति निर्दयता बढ़ती चली जा रही थी इसी कारण अशोक ने इस ओर ध्यान दिया और अपने राजकर्मचारियों को दौरे के समय इस पर ध्यान देने का आदेश दिया। जिसका उल्लेख तीसरे अभिलेख में हुआ है। जनता पर इसका प्रभाव डालने हेतु उसने विमानदर्शन, हस्तिदर्शन और अग्निस्कन्ध का सहारा लिया। इन शब्दों का वास्तविक अभिप्राय बहुत स्पष्ट नहीं है परन्तु ऐसा लगता है कि गणतंत्र दिवस या दशहरा के समान विभिन्न दृश्यों द्वारा जनता पर प्रभाव डालने हेतु झांकियों के रूप में इनका उपयोग किया गया होगा।

उसके राज्यकाल के छब्बीसवें वर्ष में उसके द्वारा उत्कीर्ण सप्तस्तम्भ लेखों में से द्वितीय स्तम्भलेख में अंकित इस पंक्ति–

दुपदचतुपदेसु पखि वालिचलेसु विविधे में अनगहे कटे आ पानदाखिनाये [4]

में उसके द्वारा मनुष्य, चौपाए, पक्षी तथा जलचरों पर विविध प्रकार की कृपा करने का वर्णन मिलता है।

अशोक के अनुसार जीव हिंसा तुरंत एकदम बंद नहीं हो सकेगी। इसके लिए वह जीव हिंसा को धीर–धीरे व्यवहारिक रूप में नियंत्रित करने के लिए कहता है कि – अमुक अमुक जीवधारियों की हत्या साल के केवल कुछ निश्चित दिनों में ही करनी चाहिए। इसकी एक लंबी तालिका वह पांचवे स्तम्भ लेख में प्रस्तुत करता है। जिसमें पशु, पक्षी, जलचर आदि सभी प्रकार के जीवधारियों को गिनाता है। इसकी उत्कृष्टता तब दिखाई पड़ती है जब वह कहता है कि अमुक–अमुक पशुओं को निलर्क्षित भी नहीं करना चाहिए तथा जीव सहित भूसे को भी नही जलाना चाहिए। इसको और प्रभावक बनाने के लिए उसने कुछ तिथियॉ भी निर्धारित की जिन दिनों अनेक जीवधारियों की हिंसा से उसने अपने को रोका कि धीरे–धीर हिंसा रूके।[5]

अशोक के अभिलेखों में जहां बराबर पहाड़ी पर उत्कीर्ण गुहालेख में उसके द्वारा आजीवकों को गुहादान देने का उल्लेख है वहीं पृथक लघुस्तम्भलेखों में नेपाल की तराई में स्थित

निग्लीवा स्तम्भलेख में उसके द्वारा कनकमुनि (एक पौराणिक बुद्ध) स्तूप को बढ़ाकर दूगुना बनाये जाने (*देवानांपियेन पियदसिन लाजिन चोदस– वसाभिसितेन बुधस कोनाकमुनस थुबे दुतियं वढ़िते*)[6] तथा रूम्मिनदेई स्तम्भ लेख के अनुसार अशोक द्वारा बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनीग्राम को पत्थर की विशाल दीवार से घिरवाने तथा वहां एक स्तम्भ स्थापित करने के साथ लुम्बिनी ग्राम को कर मुक्त घोषित कर केवल ऑठवा भाग लेने का उल्लेख मिलता है जो कि उसके बौद्ध धर्मानुयायी होने तथा अप्रत्यक्ष रूप से उसके आर्थिक वातावरण को इंगित करता है।

कलिंग का प्रथम शिलालेख तथा छठा स्तम्भ लेख अशोक द्वारा प्रजा के प्रति वत्सल्यता अथवा सामाजिक सम्बन्धों को व्यक्त करता है जो केवल उसके सीमांचल तक ही सीमित नहीं था। तेरहवें शिलालेख की नवीं व दसवीं पंक्ति –

अ षषु पि योजन शतेषु यत्र अतियोको नम योनरज परं च तेन अतियोकेन चतुरे 4 रजनि तुरमये नम अंतकिनि नम मक नम आलिकसुदरो नम निच चोड पंड अव तंबपंणिय [1] एवमेव हिद रजविषस्पि योनकंबोयेषु नभकनभितिन भोजपितिनिकेषु अंध्रपलिदेषु सवत्र देवनप्रियस ध्रमनुशस्ति अनुवटंति। द्वारा पता चलता है कि उसने धर्म विजय का प्रयास न केवल अपने राज्य में वरन् उससे भी बाहर उत्तर पश्चिम और दक्षिण के देशों में किया। उत्तर पश्चिम के सीमांत राजा के रूप में अन्तियोक, तुरमय, अन्तिकिन, मक, अलिकसुदंर तथा दक्षिण राजाओं में चोल, पाण्ड्य, ताम्रपर्णी का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त अशोक ने अपने राज्य के अंतर्गत यवन, कम्बोज, नाभक तथा नाभपन्ति, भोज, पितनिक, आंध्र व पुलिन्द का उल्लेख किया है। जिसके फलस्वरूप हमें अशोक की राजनैतिक स्थिति के साथ सामाजिक संबधों अर्थात सामाजिक पर्यावरण के विषय में भी पता चलता हैं।

इस प्रकार अशोक के अभिलेखों में पर्यावरण के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालने के उपरान्त हम यह स्पष्ट रूप से कह सकते है कि ये अशोक के जीवन में पर्यावरण का विशेष महत्व था। अशोक ने अपने अभिलेखों के माध्यम से अपनी प्रजा को, प्रजा के विभिन्न रूपों में यथा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, एवं धार्मिक स्वरूपों को समझाने का प्रयास किया है।

संदभ

- श्रीवास्तव के0सी0, प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति , इलाहाबाद प्रकाशन, 2000 पृष्ठ 241
- गुप्त परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खंड–1), वाराणसी, 2002 पृष्ठ 51
- सहाय शिव स्वरूप, भारतीय पुरालेखों का अध्ययन, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ 90
- गुप्त परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खंड–1) पृष्ठ 56
- सहाय शिव स्वरूप, भारतीय पुरालेखों का अध्ययन, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ 147
- गुप्त परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खंड–1) पृष्ठ 75
- गोयल श्री राम, प्राचीन भारतीय अभिलेख संग्रह, पृष्ठ 63–64
- मुखर्जी, राधाकुमुद, अशोक, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1962
- कनिंघम, अलेक्जेंडर, इनसक्रिपशन ऑफ अशोक, कोलकाता, 1877

- चक्रवर्ती, मनमोहन, एनिमल इन द इनसक्रिपिशन ऑफ पियदस्सी, मेमोरी ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 1906
- थापर, रोमिला, अशोक एण्ड द डिक्लाइन ऑफ द मौर्यन, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2001
- महाजन, वी0डी0, एशियन्ट इंडिया, एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1960

Copyright © 2013. *Dr Deepshikha Pandey and Dr. Sushant Kumar Pandey*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.